P-10 D.El.Ed-1st year

कला का अर्थ (MEANING OF ART)

कला का पाश्चात्य पर्याय है 'आर्ट' (Art) आर्ट लैटिन भाषा के आर्स (Ars) शब्द से बना है, यह ग्रीक के तेक्वेन (Texven) शब्द का रूपान्तर है। इस शब्द का प्राचीन अर्थ शिल्प (Craft) अथवा नैपुण्य - विशेष है। प्राचीन भारतीय मान्यताओं में भी कला के लिए शिल्प और कलाकार के लिए शिल्पी शब्द का ही अधिक प्रयोग मिलता है।

पुरातन युग से आधुनिक वैज्ञानिक व तकनीकि युग तक कला का महत्व निर्विवाद रूप से स्वीकृत है। कला मानवीय भावनाओं को सहज रूप में अभिव्यक्त करता है। कला में समाज व राष्ट्र के कल्याण की भावना सन्निहित होती है। कला मानव हृदय में सुखद भाव और अर्थपूर्ण अनुभूतियाँ उत्पन्न करती है। मानव इन्द्रियों और मन को आनन्द प्रदान करती है कला मानव के सृजनात्मक बाह्य, मूर्त रूप का संतुलन, अनुपात और सामंजस्य है। पाश्चात्य परम्परा में कला को पाँच भागों में विभाजित किया जाता है—

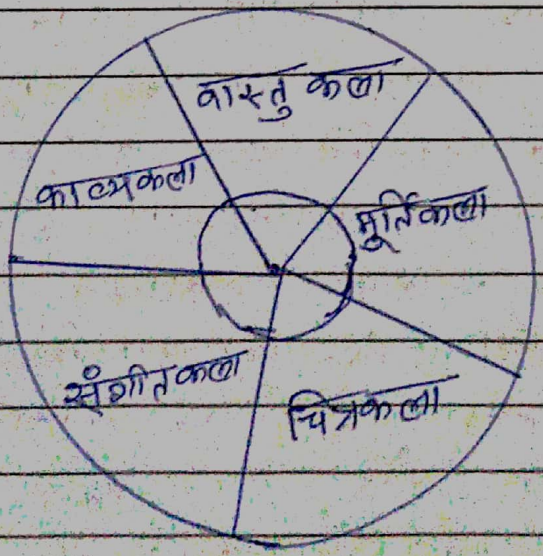

कला के अर्थ को समझने के लिए कुछ विशिष्ट विद्वानों द्वारा दी गई कला की परिभाषा को समझना आवश्यक है—

Scanned with CamScanner

कलाओं का वर्गीकरण (CLASSIFICATION OF ART)

कलाओं को मोटे रूप में निम्न चित्र के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है —

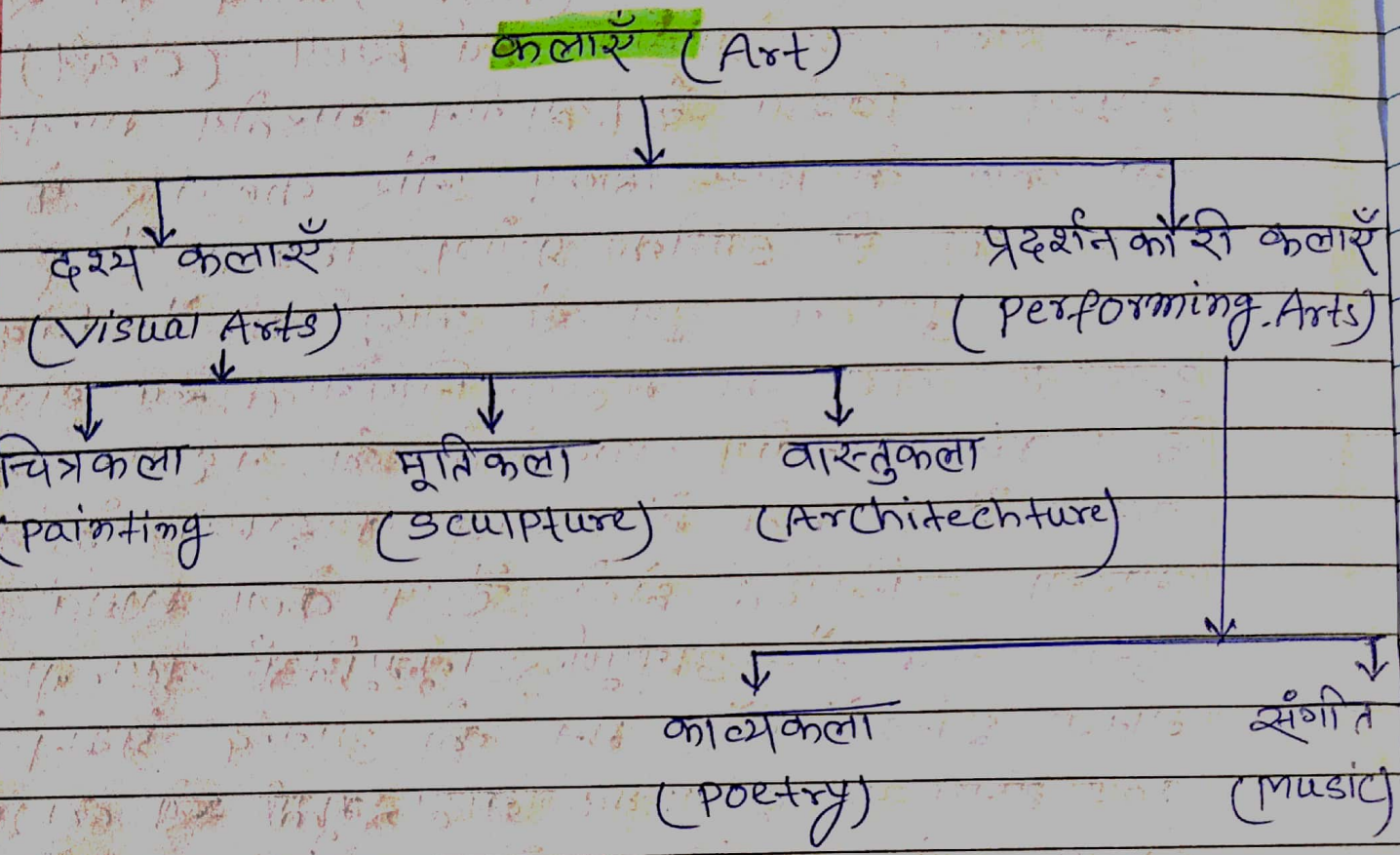

* **चित्रकला** ⇒ समस्त शिल्पों और कलाओं में प्रधान तथा सर्वप्रिय चित्रकला को माना गया है यह माना जाता है कि चित्रकला भौतिक, दैविक एवं आध्यात्मिक भावना तथा **सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम्** की समन्वि रूप की अभिव्यक्ति है। रेखा, वर्ण वर्तना और अलंकरण, इन चारो की सहायता से चित्र का स्वरूप निष्पादित होता है। आधुनिक चित्रकार कल्पना में पूर्ण विश्वास रखता है भारत में अमृता शेरगिल रविन्द्रनाथ टैगोर, अवनीन्द्रनाथ टैगोर, रजा, सूजा, एम. एफ हुसैन आदि सुविख्यात चित्रकार है।

Scanned with CamScanner

Date
Page

* मूर्तिकला ⇒ भारत में मूर्तिकला को अत्यन्त प्रतिष्ठित माना जाता है। प्राचीन भारतीय मन्दिरों की मूर्तिकला पर सम्पूर्ण विश्व आश्चर्य करता है और मुग्ध होता है मन्दिरों में मूर्तिकला का अत्यन्त उदात्त रूप देखने को मिलता है उदाहरणार्थ - दक्षिण भारत में नटराज की मूर्ति परमात्मा के विराट स्वरूप को परिलक्षित करता है भारतीय मूर्तिकला के तीन प्रमुख प्रयोजन है - धार्मिक, स्मारक और अलंकार। आधुनिक भारतीय मूर्तिकारों में देवी प्रसाद रायचौधरी शंखो चौधरी, धनराज भगत और राम किंकर को अग्रणी माना जाता है।

* वास्तुकला ⇒ भारतीय वास्तुकला के विकास का स्रोत धर्म ही रहा है, मूर्तिकला और चित्रकला को वास्तुकला के अन्तर्गत ही स्थान दिया था। प्राचीन गुफाओं, मन्दिरों आदि में तीनों कलाएँ एक साथ मिलती है। वास्तुकला का सीधा-साधा अर्थ है - उन भवनों की निर्माण कला जहाँ निवास किया जाता है। वास्तुकला साधारण रूप में स्थान की कला मानी जाती है। सुनियोजित नगर - निवेश पक्की ईंटों के बने सार्वजनि एवं निजी सड़कें जल निकाश की नालियाँ, सिन्धु सभ्यता की वास्तुकला के महत्वपूर्ण उदाहरण है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से नगर वास्तुकला के विषय में उल्लेखनीय जानकारी मिलती है वास्तुविद्या के विशारद जिस स्थान को श्रेष्ठ बताएँ, वही पर नगर बसाना चाहिए। वास्तु की तीन आकार शैलियों का उल्लेख किया है नागर (ब्रह्मा से सम्बन्धित) का भी प्रत्यक्ष सम्बन्ध सौन्दर्य से है।

Scanned with CamScanner